अन्नपूर्णा योजना
7 जन्मदिन | वैवाहिक वर्षगाँठ | पूर्वज-वार्षिकी
प्रकाशन तिथि : 09 जून, 2025
Posted at N.I. Estate P.O. N.D.-28
From 11-06-2025 to 15-06-2025
The Registrar of News Papers for India
R.N.I. DELHIN-2001-3044 Regd.
News Paper "Registered"
- DL(W) 10/2034/2023-25
- U(W)-37/2023-25
Licenced to post without prepayment

धर्मदूत

'धर्म एवं सामाजिक जागृति का अनुपम मासिक पत्र'

योगिनी एकादशी एवं अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रतिष्ठा में,

प्रेषक : विश्व जागृति मिशन, ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, 'जी' ब्लाक, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली-110015

जून, 2025 | आषाढ़ | सं. 2082 | अंक 287 | मूल्य एक प्रति 5.00 रु. | वार्षिक 50.00 रु. | पृष्ठ 8

1 अध्यात्म | 2 सम्पादकीय | 3 अम्बर की पाती | 4 समाचार दर्शन | 5 गुरु घर से पाती | 6 धर्मादा | 7 अध्यात्म | 8 पर्व त्योहार

गुरु से अक्षय ऊर्जा प्राप्त करने का पर्व है गुरुपूर्णिमा

इंसान के पास पैसे की कमी इतनी दु:खदाई नहीं है, जितनी कि विपरीत समय में आगे बढ़ने की आग की कमी। इसलिए आगे बढ़ने की उत्कट इच्छा को कभी कम मत होने दीजिए, इस उन्नति की अग्नि को कभी बुझने मत दीजिए, यही सफलता की सबसे बड़ी पूंजी है और आगे बढ़ने के लिए आपके अंदर जो प्रेरणा की आग जगाए रखता है वही गुरु है।

गुरु आपको कहता है—आप जहां पर भी हैं, जिस भी स्थिति में हैं, जीवन के जिस पड़ाव पर आप खड़े हैं, वहीं से अपने जीवन को गरिमा से युक्त करने की कोशिश कीजिए। ऊंचाइयों को, बुलन्दियों को छूने की कोशिश कीजिए, सफलताएं आपके जीवन का लक्ष्य होना चाहिए, केवल भाग्य को कोसने से कुछ होने वाला नहीं। परिश्रम और पुरुषार्थ से ही रास्ता निकलेगा, समस्याएं दूर होंगी और पटरी से उतरी हुई गाड़ी फिर से मंजिल की और दौड़ने लगेगी। आप अपनी दृष्टि को सकारात्मक रखना, भले ही सब कुछ आपके मनचाहा न होकर कुछ अनचाहा भी हो जाए लेकिन हिम्मत मत हारना, अपने जीवन को आनन्दपूर्वक जीने की कोशिश करना, ऊंचा उठने की कोशिश करना, आगे बढ़ने की कोशिश करना, क्योंकि लगातार की गई कोशिश ही इंसान को मंजिल तक लेकर जाती है। मानव जीवन ऊंचा उठने के लिए है, आगे बढ़ने के लिए है, निरंतर उन्नति प्रगति की राह पर चलने के लिए है। इसलिए ऊंचाई को देखो, अपनी योग्यता को समझो, अपने स्वरूप को समझो, अपनी ऊर्जा को केन्द्रित करो, अपनी बुद्धि से उचित निर्णय करना सीखो, आपका उचित निर्णय, उचित प्रयास, अथक परिश्रम, प्रार्थना और पुरुषार्थ ही जीवन में प्रसन्नता और सफलता के फूल खिलाएगा। सद्गुरु कभी यह घोषणा नहीं करते कि शिष्य के जीवन में

ताप त्रयाग्नि तप्तानां अशान्त प्राणीनां भुवि।
गुरुरेव परा गंगा तस्मै श्री गुरवे नमः॥

इस पृथ्वी पर त्रिविध ताप रूपी अग्नि से जलने के कारण अशांत मन वाले प्राणियों के लिए गुरुदेव ही एकमात्र उत्तम गंगा जी हैं। ऐसे श्री सद्गुरुदेव जी महाराज को बारम्बार प्रणाम है।

गुरुमंत्रो मुखे यस्य तस्य सिद्धयन्ति नान्यथा।
दीक्षया सर्वकर्माणि सिद्धयन्ति गुरुपुत्रके॥

दीक्षा में प्राप्त गुरुमंत्र जिस शिष्य के मुख में जप करते हुए सिद्ध हो जाता है तो उसके सभी कार्य सिद्ध होने लगते हैं।

धन्या माता पिता धान्यो गोत्रं धन्यं कुलोद्भवः।
धन्या च वसुधा देवि यत्र स्याद् गुरुभक्तता॥

जिसके अन्दर गुरुभक्ति है उस मनुष्य के माता-पिता धन्य हैं, उसका वंश धन्य है उसके वंश में जन्म लेने वाले धन्य हैं और वहां की धरती माता भी धन्य है।

चमत्कार होगा, बल्कि वे ऐसी शिक्षा देंगे कि शिष्य स्वयं चमत्कार करने लगेगा। इसलिए किसी चमत्कार की प्रतीक्षा में मत रहना, अपनी कार्यकुशलता से चमत्कार करके दिखाना, दुर्गम राहों को सुगम बनाकर दिखाना, सफलता के शिखर पर प्रतिष्ठित हो जाना। कभी भी, किसी भी स्थिति में अपने भगवान और सद्गुरु की कृपाओं को विस्मृत मत करना, प्रभु की दया और सद्गुरु के आशीष को साथ रखकर जीवन की यात्रा को कल्याण की यात्रा बनाकर चलते रहना, चलते रहना, मंजिल मिल जाएगी।

भगवान ने मनुष्य के शरीर में अपार क्षमताएं, मस्तिष्क में अक्षय ऊर्जा का भण्डार और संभावनाओं का एक अनंत खजाना दिया है। लेकिन मनुष्य उस अपरम्पार खजाने को मदहोशी में, तनाव में और व्यर्थ के कार्यों में व्यय कर देता है। और जब भी किसी कार्य को करने का प्रयत्न करता है तो आधा-अधूरा मन लेकर, मन में शंकाएं लेकर चलता है कि पता नहीं सफलता मिलेगी भी या नहीं? अच्छे दिन आएंगे भी या नहीं? और पता नहीं क्या होगा?

जब इंसान के मन में निराशा आती है तो आपकी ऊर्जा क्षमता, सामर्थ्य और जो आपका बुद्धिबल है, सबसे पहले वह उसे तोड़कर आपको जीरो बना देती है और आप स्वयं को छोटा समझने लगते हो। ऐसे विपरीत क्षणों में किसी सद्गुरु की शक्ति, मार्गनिर्देशक का सहारा आपको शून्य से शिखर तक पहुंचा देता है, जीरो से हीरो बना देता है। इसलिए उस प्रेरक शक्ति से हमेशा जुड़े रहो, उनके मार्गदर्शन प्राप्त करते रहो, गुरु के अमृत वचनों शिक्षाओं को किसी न किसी माध्यम से सुनते रहो, मनन- चिंतन करते रहो, गुरु की कृपाओं के प्रति कृतज्ञ रहो, धन्यवादी बनो, आभार प्रकट करते रहो। गुरु के उपकारों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का महापर्व है गुरुपूर्णिमा। गुरुपूर्णिमा पर चाहे आप सात समुन्द्र पार भी हो तो भी कोशिश करो कि उस दिन गुरु का दर मिल जाए, गुरु के दर्शन हो जायें और गुरु की कृपा भरी नजर आप पर पड़ जाए, आपका गुरु के सम्मुख मस्तक झुककर कृतज्ञता भरे दोनों हाथ जुड़ जाएं तथा गुरु चरणों में आपका प्रणिपात हो जाए। गुरुपूर्णिमा पर यदि ऐसा अवसर आपको मिल गया तो समझो पूरे वर्ष भर के लिए आपने अपने आपको गुरु कृपा से रिचार्ज कर लिया। ●

प्रवचन यात्रा की स्वर्ण जयंती - गुरुकृपा के 25 वर्ष

गुरु पूर्णिमा महोत्सव पावन सान्निध्य
पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज एवं डॉ. अर्चिका दीदी जी

07 से 10 जुलाई, 2025
गुरुदर्शन एवं गुरुपूर्णिमा महोत्सव
10 जुलाई । प्रातः 8 बजे से

शक्ति टेन्ट
(द गोल्डन डेकोर)
नजदीक जापानी पार्क, सेक्टर-12,
रोहिणी, दिल्ली-110085

आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं

कार्यक्रम शुभारंभ :-
07 जुलाई - सायं 5 बजे से सत्संग
08 जुलाई - प्रातः 8 से 10 बजे तक गुरु मंत्र सिद्धि साधना
सायं 5 बजे से सत्संग
09 जुलाई - प्रातः 8 से 10 बजे तक गुरु मंत्र सिद्धि साधना
10 से 11 बजे तक दिव्य शक्तिपात क्रिया
11 बजे से गुरु मंत्र दीक्षा
सायं 5 बजे से सत्संग
10 जुलाई - प्रातः 8 बजे से गुरु दर्शन, पाद्पूजन
एवं गुरुपूर्णिमा सत्संग

ऑनलाईन / ऑफलाईन गुरु मंत्र सिद्धि साधना के लिए सम्पर्क करें
आयोजक: विश्व जागृति मिशन (+91) 8826891953, 9589938938
www.vishwajagritimission.org 8826891955, 9312284390

पूर्णता का पर्व है गुरुपूर्णिमा

प्रत्येक मास पूर्णिमा का पर्व मनाया जाता है। भारत में जब सर्वकलाओं से सम्पन्न जैसे चन्द्रमा अपनी चांदनी बिखेरकर जगत को रोशन कर देता है, वैसे ही उस दिन सद्गुरु अपने शिष्यों को दर्शन और ज्ञान देकर उनके जीवन में आत्मबोध का प्रकाश जागृत करते हैं। उसे मानव जीवन का उद्देश्य, जीवन में सफलता पाने के तरीके, जीवन जीने के रास्ते और उसके जीवन से जुड़े सभी पक्षों का ज्ञान देते हैं। गुरुपूर्णिमा एक वर्ष में एक बार आती है, लेकिन यह शिष्य के जीवन को एक नवीन उत्कर्ष, एक नया बोध, एक नई ऊर्जा, नया विश्वास और नया उत्साह उपहार में दे जाती है। सद्गुरु शिष्य के जीवन का चन्द्रमा बनकर उसका नवीनीकरण कर देते हैं। सद्गुरु ईश्वर के प्रतिनिधि हैं। ईश्वर पूर्ण है, पूर्ण से पूर्णता ग्रहण कर गुरु शिष्यों में बांट देते हैं। अपने तप, त्याग, तपस्या, स्वाध्याय, परोपकार, सेवा, साधना से जो पूर्णता प्रभु से गुरु ने प्राप्त की, वह सम्पन्नता सद्गुरु शिष्यों को आशीष रूप में विभाजित कर देते हैं।

सद्गुरु तो कृपाओं का भण्डार हैं। वह शिष्य को समझाते हैं, ईश्वर में आस्था रखो, सुख से संसार का आनन्द लो, किन्तु ईश्वर को साक्षी मान कर उसकी छत्रछाया में हृदय से कर्म करो, ईश्वर इच्छा में दृढ़ विश्वास रखिए, ईश्वर के दिव्य गुणों करुणा, मुदिता, मानवप्रेम, प्राकृतिक सौन्दर्य, सेवा, सहयोग, स्वाध्याय, समर्पण आदि अनेक सद्गुणों को अपने जीवन में उतारो, तो देखो तुम्हारे जीवन में क्या-क्या चमत्कार होते हैं। गुरु में आस्था और विश्वास रखो। स्वार्थ, लोभ, काम, क्रोध आदि दुर्गुणों से अपने को बचाइये। अपने हृदय को निर्मल रखिए, निष्कपट हृदय में ही ईश्वर का वास होता है।

सद्गुरुदेव परम पूज्य श्री सुधांशु जी महाराज ने अपनी अर्ध शताब्दी की आध्यात्मिक यात्रा में लाखों शिष्यों एवं करोड़ों अनुयायियों के जीवन का रूपान्तरण किया है। प्राचीन वैदिक संस्कृति एवं सनातन धर्म का प्रचार करके, गरीब व दीनहीन मजबूर लोगों के लिए कल्याणकारी योजनाएं प्रारम्भ करके मानव जाति पर अनेक उपकार किये हैं। चलो चलें सब रोहिणी गुरुपूर्णिमा पर्व के साक्षी बनने, सद्गुरु के दर्शन करने, सद्गुरु से ज्ञान पाने, सद्गुरु को शीश झुकाने और अपने भाग्य को जगाने के लिए।

-डॉ. नरेन्द्र मदान

गुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज एवं डॉ. अर्चिका दीदी के विचार सुनने व विश्व जागृति मिशन से जुड़ने और दूसरों को जोड़ने के लिए सोशल मीडिया के निम्नलिखित प्लेटफार्म पर सम्पर्क करें-

TO CONTACT US : LOG-IN

Phone +91 99999 04747
www.sudhanshujimaharaj.net
www.vishwajagritimission.org
www.drarchikadidi.com
info@sudhanshujimaharaj.net
info@vishwajagritimission.org

VISHWA JAGRITI MISSION
Facebook Youtube Instagram X Linked In Whatsapp

HIS HOLINESS SUDHANSHU JI MAHARAJ
Facebook Youtube Instagram X Koo Linked In Speaking Tree

DR. ARCHIKA DIDI JI
Facebook Youtube Instagram X Koo Linked In Speaking Tree

संस्कार सोमवार से शुक्रवार प्रतिदिन प्रातः 7:45 से 8:05 तक
साधना प्रत्येक रविवार, सोमवार, बुधवार, शुक्रवार प्रातः 7:00 से 7:20 तक
ईश्वर प्रतिदिन प्रातः 8:10 से 8:30 बजे तक
गीता ज्ञान अमृतम् 21 अप्रैल, 2025 से प्रतिदिन प्रातः 7:00 से
DD NATIONAL
Tata Sky - 197
Airtel - 153
Dish TV - 113
Tata Play - 114 in SD
Jio TV, Watcho and Waves OTT

Jaago Sudhanshu ji Maharaj

परमात्मा के उद्यान की सुगन्ध को आप तक पहुँचाने वाले लोग कुछ अलग तरह के होते हैं। उन्होंने न जाने कितने कष्ट सहे। दुनिया रास्ते में कांटे बिछाती रही। काँटों से भरे पथ पर चल कर दुनिया के सामने फूल बाँटते रहे, दूसरों को अमृत पिलाते रहे और स्वयं जहर पीते रहे। गालियाँ खाकर अपने मीठे वचन से सारे संसार को स्वर्ग बनाते रहे।

इस देश में सबसे अधिक सम्मान है तो उन संतों का, ऋषियों का, गुरुओं का, जिन्होंने भारत की संस्कृति को जिन्दा रखा। एक समय था जब सुभाषचन्द्र बोस जैसे नेताओं के साथ समाज खड़ा था, फिर धारा बदली-अभिनेताओं के साथ समाज खड़ा हो गया। अब धर्म और संस्कृति को परोसने वाले धर्मनायक सद्गुरु के साथ आज जनता आकर खड़ी हो गयी है। संक्रान्ति का यह युग दर्शाता है कि आज आवश्यकता है भय से आक्रान्त मनुष्य के अन्दर सच्ची शान्ति और प्रेम को भर देने वाले सद्गुरु की। पुराने समय में सद्गुरु आसानी से द्वार नहीं खोलता था। पात्रता को ढूंढता था कि कोई योग्य शिष्य मिल जाय। शिष्य भी ऐसे थे जो बरसात के चार महीने सब काम छोड़कर गुरु की शरण में बैठते थे। गुरु की वाणी बरसती थी और अन्तःकरण भीग जाता था। जन्म-जन्मान्तरों की मैल धुल जाय और उद्धार हो जाय ऐसी भावना लेकर लोग पहुँचते थे। जंगल की भयंकर घाटियों को पार करते हुए किसी सद्गुरु का पर्दापण होता था तो राजा हो या रंक सब सिर झुकाते थे। यह वह युग था जब राजा हाथी से उतरता था और दण्डवत् करके आशीर्वाद की याचना करता था। आप कृपा भरा हाथ मेरे सिर पर रख दें तो मेरा कल्याण हो जाय। ●

परमपूज्य श्री सुधांशु जी महाराज के पावन सानिध्य में आयोजित
भक्ति सत्संग के आगामी कार्यक्रम, 2025

गुरुपूर्णिमा के देशव्यापी कार्यक्रम

11 जून	- पूर्णिमा दर्शन, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
15 जून	- रायपुर, छत्तीसगढ़
	प्रातः - गुरुदर्शन, पादपूजन एवं गुरुपूर्णिमा सत्संग
21 जून	- अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
	(डॉ. अर्चिका दीदी के पावन सान्निध्य में)
21 जून	रविंद्रालय, चारबाग, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)
	सायं - गुरुदर्शन, पादपूजन एवं गुरुपूर्णिमा सत्संग
22 जून	- सिद्धिधाम आश्रम, कानपुर (उ.प्र.)
	सायं - गुरुदर्शन, पादपूजन एवं गुरुपूर्णिमा सत्संग
27 से 28 जून	- पुणे, महाराष्ट्र
	27 जून, सायं - सत्संग
	28 जून, प्रातः-गुरुदर्शन, पादपूजन एवं गुरुपूर्णिमा सत्संग
29 जून	- वरदान लोक आश्रम, थाणे-मुम्बई (महाराष्ट्र)
	प्रातः - गुरुदर्शन, पादपूजन एवं गुरुपूर्णिमा सत्संग

मुख्य गुरुपूर्णिमा महोत्सव, रोहिणी, दिल्ली में 07 से 10 जुलाई, 2025

07 जुलाई	- सायं 5 बजे से सत्संग
08 जुलाई	- प्रातः 8 से 10 बजे तक गुरुमंत्र सिद्धि साधना
	सायं 5 बजे से सत्संग
09 जुलाई	- प्रातः 8 से 10 बजे तक गुरु मंत्र सिद्धि साधना
	10 से 11 बजे तक दिव्य शक्तिपात क्रिया
	11 बजे से गुरु मंत्र दीक्षा
	सायं 5 बजे से सत्संग
10 जुलाई	- मुख्य गुरुपूर्णिमा महोत्सव
	प्रातः 8 बजे से गुरुदर्शन, पादपूजन एवं विशेष आशीर्वचन
17 से 20 जुलाई	- बैंगलुरु, कर्नाटक
04 अगस्त	- युवा अभ्युदय, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
09 अगस्त	- पूर्णिमा दर्शन एवं रक्षा बंधन
	ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, नई दिल्ली
07 सितम्बर	- पूर्णिमा दर्शन, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
2 अक्टूबर	- श्रद्धापर्व, आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली
12 से 16 नवम्बर	- श्रीकृष्ण ध्यान-योग, वृन्दावन, उत्तर प्रदेश

आयोजक : विश्व जागृति मिशन

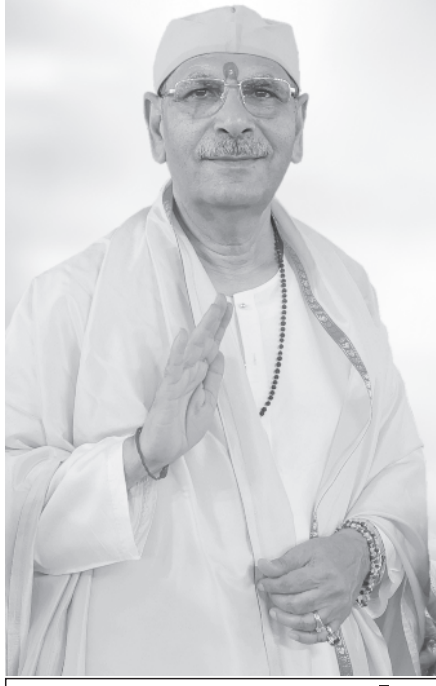

प्रिय आत्मन्!

भाग्यशाली होते हैं वे लोग जिनके जीवन में गुरु हैं, गुरु के दिए हुए नियम हैं और जो नियमित रूप से गुरु मंत्र का जाप करते हैं। जिस दिन शिष्य दीक्षा लेता है उस दिन गुरु उसका हाथ पकड़कर ईश्वर को पकड़ाता है। ईश्वर का प्रेम शिष्य के जीवन में अमृत की तरह बरसता रहे इसलिए भगवान से बंधे रहने के लिए गुरु नित नियम देता है ताकि शिष्य नियम से भगवान से जुड़ा रहे। जब शिष्य गुरु का हो जाता है तो ईश्वर कहता है मैं अब तुम्हें नहीं छोड़ूंगा पर तुम भी अपना नित नियम नहीं छोड़ना। यही नित का नियम और श्रद्धापूर्वक गुरु से प्राप्त मंत्र का जाप तुम्हारा लोक भी सुधार देगा और परलोक भी संवार देगा। लेकिन कई बार नियम को तोड़ने से कुछ लोग भवसागर के किनारे तक पहुंच चुके होते हैं पर पार लगने से पहले ही किनारे पर डूब जाते हैं। इसलिए डूबने से बचने के लिए नित नियम से गुरुमंत्र का जाप करते रहो, लगातार करते रहो, अपना नियम तोड़ना नहीं, मंत्र जप छोड़ना नहीं। एकांत में, शांत भाव से उसके नाम को जपते रहो। एकांत सेवन से संग दोष छूट जायेगा और मौन से शब्द दोष छूट जायेगा। ध्यान से विचार दोष छूट जाता है। समाधि से मैं की मैल छूट जाती है, इसलिए इन सब चीजों को अपनाओ। गुरु और भगवान के प्रति पूर्णत: समर्पित होकर प्रार्थना करो कि हे प्रभो! मुझे वो धन दो जिससे जन्मों की निर्धनंता दूर कर सकूं। मुझे वो स्थान दो जिससे मैं दुनिया का दिल जीत सकूं और आपके करीब रह सकूं। मुझे वो सेहत दो जिससे आखिरी सांस तक आपका गुणगान कर सकूं। भगवान करे यह गुरुपूर्णिमा आपकी हर शुभ मनोकामना को पूर्ण करने वाली सिद्ध हो।

बहुत-बहुत आशीर्वाद, शुभ मंगल कामनाएं।

–आचार्य सुधांशु

एक बार दान, अनंतकाल तक पुण्य का वरदान

धर्मकोष एक ऐसा कोष है जिसमें दानदाता एक बार में एक निश्चित धनराशि संस्था द्वारा चलाई गई विभिन्न सेवाओं के लिये दान करेगा, वह राशि दानदाता अपनी सुविधानुसार चार किश्तों में भी दे सकता है। दानदाता से प्राप्त सहयोग राशि को बैंक में स्थाई रूप से जमा कर दिया जायेगा और उस राशि से प्राप्त ब्याज या अन्य माध्यमों से प्राप्त आय द्वारा विश्व जागृति मिशन की विभिन्न सेवाएं निरन्तर संचालित रहेंगी। धर्मकोष में दी गई यह धन राशि ठीक वैसे ही है जैसे एक बार आम का पेड़ लगाओ और जिन्दगी भर उसके फल खाओ। अर्थात् धर्मकोष में एक बार दान दो और उस दान की अर्जित राशि से वर्षों-वर्षों तक दान देने का पुण्य लाभ पाओ।

धर्मकोष दानदाताओं के लिए आनन्दधाम में होता है

नित्य यज्ञ, पूजा, प्रार्थना एवं आरती

मिशन द्वारा संचालित सेवाकार्यों और भक्तों के अनन्तकाल तक पुण्य प्राप्ति के लिए एक **''धर्मकोष''** बनाया गया है। इस धर्मकोष में दान देने वाले भक्त के नाम के साथ उसकी वंशावली का नाम एक कालपात्र में स्वर्णाक्षरों में अंकित कर उसे द्वादश ज्योतिर्लिंग प्रांगण में स्थापित किया गया, जो कि सैकड़ों वर्षों तक सुरक्षित रहेगा और दानदाता के आनेवाली पीढ़ियां अपने पूर्वजों पर गर्व करेंगी। धर्मकोष के दान-दाताओं की वंशावली शिव वरदान तीर्थ में स्थापित हैं, जहां पर नित्य सायंकालीन यज्ञ, आरती में गुरुकुल के ऋषिकुमारों द्वारा धर्मकोष के दानदाताओं के लिए यज्ञ में आहुतियां दी जाती हैं तथा उनके लिए प्रार्थना व मंगलकामना भी की जाती है।।

धर्मकोष में आप यह सहयोग सीधे बैंक एकाउण्ट में भी जमा कर सकते हैं। जमा करने के उपरान्त श्री ललित कुमार जी को फोन नम्बर - 9312284390 पर अवश्य सूचित करें ताकि दिये गये दान की रसीद आपको भेज सकें।

Name of Account : VISHWA JAGRITI MISSION
Account number : 235401001600
IFSC : ICIC0002354
Name of Bank : ICICI Bank
Address of Branch : Shop Number 3, Nazafgarh Road,
Nangloi, New Delhi - 110041

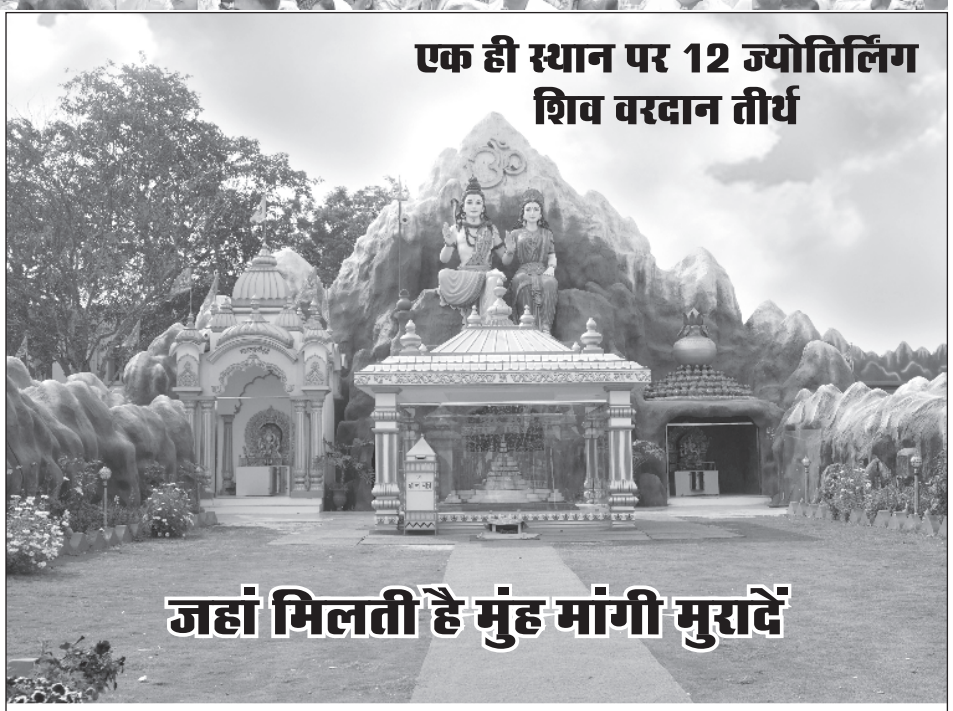

एक ही स्थान पर 12 ज्योतिर्लिंग शिव वरदान तीर्थ

जहां मिलती है मुंह मांगी मुरादें

शिव वरदान तीर्थ में देश के प्रमुख तीर्थों में स्थित 12 ज्योतिर्लिंगों के वास्तविक स्वरूप को पर्वत माला की गुफा में शास्त्रोक्त विधि से अभिमंत्रित कर क्रमश: स्थापित किया गया है। निरंतर पूजा-पाठ, मंत्र-जाप से ये ज्योतिर्लिंग महा वरदानी बन चुके हैं। जिन ज्योतिर्लिंगों के दर्शन के लिए भक्त जन दक्षिण में रामेश्वरम से लेकर उत्तर में हिमालय के केदारनाथ और पूर्व में वैद्यनाथ से लेकर पश्चिम में सोमनाथ जाते हैं। अब उन्हें अन्य स्थानों पर जाने की जरूरत नहीं है वे 12 ज्योतिर्लिंगों के शिव वरदान तीर्थ में एक साथ ही दर्शन-पूजन कर देश के 12 प्रमुख ज्योतिर्लिंगों के दर्शन का पुण्यफल प्राप्त कर सकते हैं।

शिव वरदान तीर्थ पर्वत श्रृंखला के मध्य भाग में माँ लक्ष्मी और गणेश भगवान की कृपा का पवित्र धातु से निर्मित स्वर्णिम आभा लिए 810 किलो का एक पूजित श्रीयंत्र स्थापित है। जिसके सामने बैठकर प्रार्थना करने से ब्रह्माण्ड की दिव्य ऊर्जा भक्त के दुख-दुर्भाग्य को दूर कर सुख-सौभाग्य का वरदान देती है। इसी तीर्थ में भगवान तिरुपति बालाजी, कुबेर जी, गरुड़ जी, माँ पार्वती एवं कार्तिकेय जी की स्थापना की गई है। यहां दर्शन पूजन के लिए देश-विदेश से भक्त जन आते हैं। यह ऐसा स्थल है जहां भक्तों की मुंह मांगी मुरादें पूरी होती है।

देने की भावना से दिल में बढ़ती है खुशी

मन में एकाएक किसी के प्रति कृतज्ञता और परोपकार की भावना जागे तो उस अवसर को हाथ से न निकलने दें। थोड़ा ठहरें, अपने दिल के उस कोमल हिस्से पर ध्यान दें, जहां से ये प्यारी भावनाएं जन्म ले रही हैं। कृतज्ञता और परोपकार की भावना प्रेम और आनंद के अनुभवों से इसी तरह रू-ब-रू कराती है। इससे आप शरीर और मन के बीच एक रिश्ता कायम कर पाते हैं। हृदय में उपजी यह प्रेरणा कहती है कि कृतज्ञता और देने की भावना का संदेश भेजा जा चुका है और अब वह आपकी कोशिकाओं तक पहुंच गया है। जिन चीजों के प्रति कृतज्ञ हैं, उन्हें अपनी कल्पना में देखने की कोशिश करें तो यह रिश्ता और मजबूत बन जाएगा। आप लेने के बजाय देने की भावना को समृद्ध बनाएं।

कहा जाता है, दान से हाथ पवित्र हो जाते हैं। पेट में खाया हुआ भोजन जमा होने पर गंदगी बढ़ाता है और गैस बनकर पेट में तकलीफें पैदा करने लगता है। तालाब से पानी निकलना बंद हो जाए तो वह सड़ने लग जाता है लेकिन वही तालाब का पानी यदि खेतों में सिंचाई के लिये छोड़ दिया जाता है तो वह फसलों के रूप में सोना, मोती उगलने लग जाता है। वास्तविक खुशी और प्रसन्नता के कारणों पर एक शोध हुआ। शोध से यह सामने आया कि धन की अधिकता से ही व्यक्ति प्रसन्नता महसूस नहीं करता है, वह अपना धन दूसरों पर खर्च कर ज्यादा प्रसन्नता महसूस करता है। कोलंबिया यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं का कहना है कि चाहे खर्च की गई ऐसी रकम छोटी ही क्यों न हो, व्यक्ति को प्रसन्न बनाती है। इस बात से फर्क नहीं पड़ता कि कौन कितना कमाता है। महत्वपूर्ण यह है कि वह दूसरों पर खर्च करता है या नहीं। लोगों ने दूसरों के लिये

कुछ खर्च करने के बाद अपने भीतर ज्यादा खुशी महसूस की है। ●

विश्व जागृति मिशन द्वारा मनाली में दो पांच दिवसीय ध्यान साधना और 15 दिवसीय अर्द्ध चांद्रायण तप शिविर सम्पन्न

प्रकृति के साथ जुड़ें, भागदौड़ भरी जिंदगी में खुद के लिए समय निकालें - सुधांशु जी महाराज

- सक्षम भारत सशक्त भारत की उज्जवल कामना से किया गया महायज्ञ
- ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी ने ध्यान में दिए जीवन जीने के सूत्र
- ऑपरेशन सिंदूर की अपार सफलता पर मिशन ने निकाली तिरंगा यात्रा

मनाली। हिमाचल प्रदेश में मनाली और उसके आस पास का क्षेत्र भारतीय संस्कृति और उसकी विरासत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। मनाली का ही क्षेत्र है जहां पुराणों में सप्तर्षियों का निवास बताया जाता है। मनाली शहर का नाम मनु के नाम पर पड़ा है। पौराणिक कथा है कि जल प्रलय से जगत और जीवन के विनाश के समय अपने जहाज से मनुष्य और जीवों को लेकर मनु करुणानिधान बन यहीं पर उतरे थे। इस घाटी को देवताओं की घाटी के रूप में जाना जाता है। धरती के स्वर्ग कहे जाने वाले मनाली को अनादिकाल से लेकर अब तक ऋषि-मुनि, तपस्वियों-साधकों ने जप-तप, ध्यान-साधना से इस भूमि को पावन किया है। मनाली की ही पावन भूमि पर स्थित है साधना धाम आश्रम। साधना धाम आश्रम एक तपस्थली साधना भूमि है जहां हर वर्ष पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज अपने साधक शिष्यों को ध्यान की विधियां सिखाने ले जाते हैं और वहीं पर चाद्रांयण तप साधना भी करवाते हैं। इस वर्ष मनाली के साधना धाम आश्रम (आनंद वर्धन रिसोर्ट) में विश्व जागृति मिशन द्वारा पूज्य गुरुवर श्री सुधांशु जी महाराज एवं ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी के सान्निध्य में 8 से 22 मई, 2025 तक अर्द्धचांद्रायण तप साधना एवं 8 से 12 व 14 से 18 मई, 2025 तक दो पंच दिवसीय ध्यान शिविर आयोजित किए गए, जिनमें सहभागिता कर देश-विदेश के साधकों ने पूज्य गुरुवर एवं डॉ. दीदी से ध्यान की विधियां सीखीं और चांद्रायण तप साधना का पुण्य लाभ प्राप्त किया।

इस कार्यक्रम का शुभारम्भ पूज्य सदगुरुदेव श्री सुधांशु जी महाराज द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया। इस अवसर पर भक्तों ने अपनी साधना को सफल करने के लिए गुरु चरण पादुका को प्रणाम करके आशीर्वाद लिए। पूज्य महाराजश्री ने देश में शांति अमन और चैन के लिए परमात्मा से वंदना के उपरान्त भारत राष्ट्र सुरक्षित रहे की कामना करते हुए साधकों से कहा कि जिसने जीवन दिया है, समय का पहला भाग उस भगवान के लिए दें, आप सभी इस तपोभूमि में खुद को जानने के लिए एकत्रित हुए हैं, यह जीवन चिंता, भय, निराशा और दूसरों को दोष देने के लिए नहीं है। तितली के पास एक महीने का जीवन होता है और वह इतने छोटे जीवन को पूर्ण आनन्द व उल्लास से जीती है। पीड़ा समस्या और चुनौती सबके पास है, इन सबके बीच में जो जीवन को अच्छे से जी रहा है वही भाग्यशाली है और उसे ही जीवन जीने की कला आ रही है।

आप अपनी चुनौतियों को कुछ समय के लिए भूलकर ध्यान साधना में संलग्न होकर खुद को नया बनाकर यहां से जाएं। अपनी जीवात्मा और चैतन्य को जानने के लिए ध्यान में विचार का शून्य होना, भावातीत होना, भावना हीन होना, निर्भाव होना, शान्त होना, मन में न कोई विचार, न कोई सोच हो और मैं आनंदित हूं कि भावना से खुद को परमात्मा से जोड़ें।

इस अवसर पर ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी ने देश-विदेश के साधकों को ध्यान की अतल गहराइयों में ले जाकर ध्यान एवं योग के कई आसन बताए और जीवन में ध्यान को लागू करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि ध्यान में भगवान को याद करें और महसूस करें कि उनकी कृपा आपके जीवन में बरस रही है। मन को आज्ञाचक्र में स्थिर करते हुए अपने मन में उभरते हुए बुरे विचारों को ध्यान की ज्योति से भस्म कर दें और इस मायावी संसार से बाहर निकल कर परमात्मा के परम आनंद स्वरूप में विचरण करते हुए उसके आनंद को अपने अंदर महसूस करें। आप अपने माता-पिता का धन्यवाद करें जिन्होंने जीवन देकर आपके जीवन दीप को ज्योतित किया और अपने गुरु का धन्यवाद करें जिन्होंने ज्ञान-ध्यान से पूरित कर आपके जीवन को सुख-शांति और आनंद से भर दिया।

महाराजश्री ने चांद्रायण तप साधना में भक्तों को सम्बोधित करते हुए कहा- व्यक्तित्व निर्माण करने के लिए तप और साधना अति आवश्यक है और जीवन में जब तक भक्ति के लिए पागलपन नहीं होगा, तब तक परमात्मा की कृपा प्राप्त नहीं होगी। ध्यान साधना एवं चांद्रायण तप में सहभागी भक्तों को गुरुवर ने शक्तिपात क्रिया से ऊर्जान्वित कर नवचेतना से भर दिया। इस अवसर पर डॉ. अर्चिका दीदी ने पवित्र जल से भक्तों पर अमृत अभिसिंचन कर उनके स्वस्थ, समृद्ध व आनंदमय जीवन की प्रभु से मंगल कामना की। ●

राष्ट्र विजय के लिए पांच कुण्डीय महायज्ञ

शिविर के दौरान साधना धाम आश्रम में पूज्य गुरुवर एवं ध्यान गुरु डॉ. अर्चिका दीदी के सान्निध्य में पांच कुण्डीय महायज्ञ किया गया। ज्ञात हो कि ध्यान-साधना के दौरान भारत और पाकिस्तान का युद्ध छिड़ा था ऐसे में गुरुवर के सान्निध्य में राष्ट्र विजय की कामना से मनाली में पांच कुण्डीय यज्ञ किया गया, जिसमें भक्तों ने यज्ञ भगवान को आहुतियां देकर राष्ट्र विजय के साथ सक्षम और सशक्त भारत के लिए यज्ञ भगवान से प्रार्थना की। इस अवसर पर भक्तों को सम्बोधित करते हुए महाराजश्री ने कहा कि खुद को जानना और खुद में ही स्थिर रहना आध्यात्मिक विरासत हैं। हर कर्म की याद बीज बन जाती है और वह बीज संस्कार बनकर व्यक्ति के जीवन में आती है। गुरुवर ने कर्मों के बारे में विस्तार से साधकों को समझाया। महाराजश्री ने कहा कि अपने कर्मों के प्रारब्ध को नहीं बदला जा सकता है। प्यारे ईश्वर को आसमानों के उस पार आनंददाता परमेश्वर को याद करते हुए ओंकार का उच्चारण करें और अपनी ओर ऊर्जा को खीचें। सारी गलतियों के लिए भगवान से माफी मांग लें, अपने गुरुदेव से माफी मांग लें। प्रभु से प्रार्थना करें जिसमें मेरी तरक्की और खुशहाली हो वही देना प्रभु। प्रभु को अंतरात्मा से प्रणाम करें। हमें शुद्ध कीजिए और निर्मल कीजिए, प्रभु तथा ईष्टदेव का नाम जप का नियम बनाएं और उनकी कृपाओं के लिए दिल से धन्यवाद करें। ●

साधनाधाम आश्रम पधारे आचार्य बालकृष्ण जी, आचार्य प्रमोद कृष्णम जी एवं श्री जयराम ठाकुर जी

इस शिविर के अवसर पर औषधि विज्ञान के महान मर्मज्ञ पतंजलि के महामंत्री आचार्य श्री बालकृष्ण जी दो दिवसीय प्रवास पर साधना धाम आश्रम पधारे, उन्होंने आश्रम के प्राकृतिक वातावरण में सद्गुरु जी महाराज के सान्निध्य में ध्यान साधना कर रहे साधकों के सौभाग्य को सराहा। शिविर के दौरान ही कल्कि पीठाधीश्वर आचार्य प्रमोद कृष्णम जी एवं हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री जयराम ठाकुर जी ने भी शिरकत कर मिशन द्वारा निकाली गई तिरंगा यात्रा में सम्मिलित हुए। ●

गुरु चरणों में समर्पण से संवर रहा लोक और परलोक

सन्मुख होई जीव मोहिं जबहीं। जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं।। (रामचरित मानस)

रामचरित मानस में भगवान श्री राम ने कहा है कि कोई समर्पित भाव से मेरे समक्ष आ जाता है तो मैं उसके जन्मो-जन्मों के पाप-संताप को नष्ट कर देता हूं लेकिन शर्त यह है कि वह पहले स्वयं का समर्पण तो करे। गुरु घर से पाती की श्रृंखला में मई माह में मैंने गुरुवर द्वारा मिशन को दिए सात सूत्रों में 'संतोष' पर लेख लिखा था और इस बार 'समर्पण' पर लिख रहा हूं। समर्पण का अर्थ है मेरा व्यक्तित्व अब तेरा नहीं रहा वह उनका हो गया जिनको मैंने अपना मान लिया, जिनके लिए मैं समर्पित हो गया। अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में। समर्पण है 'भार सौंप कर निर्भार' हो जाना लेकिन इसका आशय यह नहीं है कि अकर्मण्य हो जाना बल्कि और कर्मठता व सजगता से कार्य करते हुए परिणाम की परवाह न करना। अच्छे परिणाम देने या दिलवाने की गारंटी तो अब उनकी है जिनके प्रति आपने पूर्ण समर्पण कर दिया है। जब तक समर्पण नहीं होता तब तक सच्चा सुख नहीं मिलता। इसलिए जीवन में जो भी करें पूर्ण समर्पण से करें। समर्पण कई तरह का होता है। समर्पण एक भक्त का भगवान के प्रति, संतान का अपने माता-पिता के प्रति, शिष्य का गुरु के प्रति, नौकर का मालिक के प्रति, मित्र का मित्र के प्रति। मीरा ने जब 'मेरो तो गिरधर गोपाल' कहकर समर्पण किया तो गोविन्द ने जहर का प्याला भी अमृत में बदल दिया। द्रोपदी ने जब हार थककर अपने दोनों हाथ उठाकर प्रभु के प्रति समर्पण किया तो श्री कृष्ण ने द्रोपदी का चीर हरण नहीं होने दिया। अर्जुन ने जब 'करिष्ये वचनं तव' कहकर समर्पण किया तो युद्ध क्षेत्र को देखकर कांप जाने वाले पांडव अर्जुन को कृष्ण ने महाभारत का योद्धा बना दिया। चंद्रगुप्त ने चाणक्य के प्रति समर्पण किया तो एक साधारण बालक महान साम्राज्य का संस्थापक बन गया। विवेकानंद ने रामकृष्ण के प्रति समर्पण किया तो स्वयं मां काली विवेकानंद के हृदय में स्थापित हो कर उनका मार्ग प्रशस्त करने लगीं।

इतिहास साक्षी है कि जब भी पूर्ण निष्ठा के साथ किसी ने समर्पण किया तो एक साधारण व्यक्ति भी असाधारण व्यक्तित्व का स्वामी बन गया। गुरुवर के चरणों में समर्पण से पूर्व मेरा स्वयं का बहुत अच्छा व्यवसाय था। गुरु की आज्ञा हुई और मैं अपना व्यवसाय अपने भाई और परिवार को सौंपकर गुरुवर के चरणों में पूर्ण समर्पण कर मिशन के लिए पूर्णत: समर्पित हो गया। समर्पण का प्रतिफल है कि मेरे भाई और परिवार का व्यवसाय जहां दिनोंदिन बढ़ने से उनको भरपूर भौतिक समृद्धि मिल रही है वहीं गुरुवर ने अपने चरणों की सेवा देकर मुझे आध्यात्मिक सम्पदा से समृद्ध कर दिया है। मेरा लोक भी सुधर गया और परलोक भी संवर रहा है।

प्रयास करें प्रतिदिन गुरु से जुड़े रहें। चाहे टी.वी., सोशल मीडिया, सत्संगों या ध्यान शिविरों के माध्यम से। विशेष गुरुपूर्णिमा आ रही है। गुरुवर ब्रह्मवेला में नित्य देवपूजन, पाठ, जप और ध्यान तो करते ही हैं विशेष अवसरों पर दैवीय ऊर्जा से भरपूर विशेष स्थानों पर ध्यान-साधना करते हैं। इस बार गुरुवर ने एक महीने तक मनाली में विशेष ध्यान किया। ध्यान से प्राप्त दिव्य और दैवीय ऊर्जा अमृत को बरसाने के लिए गुरुवर गुरुपूर्णिमा महोत्सव पर पधार रहे हैं। शिष्यों के लिए दिव्य गुरु कृपा अमृत प्राप्ति का सुनहरा अवसर है गुरुपूर्णिमा। गुरुपूर्णिमा के अवसर पर **7 से 10 जुलाई, 2025 तक शक्ति टेन्ट, गोल्डन डेकोर, रोहिणी, दिल्ली** में गुरुपूर्णिमा महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। गुरुपूर्णिमा पर आप सपरिवार इष्ट मित्र सहित सादर आमंत्रित हैं।

आपके जीवन में भी गुरु से जुड़ने के पश्चात् निश्चित ही कुछ अप्रत्याशित, आश्चर्यजनक बदलाव आए होंगे, आपत्ति-विपत्ति से बाहर निकले होंगे, तो आप अवश्य हमसे अपने अनुभव साझा कीजिए ताकि आपसे प्रेरित होकर अन्य भक्तों की भी गुरु के प्रति श्रद्धा बढ़े और उन्हें भी आप के जैसा ही गुरु कृपा का लाभ प्राप्त हो सके। आप अपने अनुभव फोटो सहित श्री शिवाकांत द्विवेदी जी (9968613351) सहसम्पादक धर्मदूत को अवश्य भेजें।

क्रमशः ...

आपका अपना
देवराज कटारीया

ध्यान साधना के दौरान विश्व जागृति मिशन ने निकाली तिरंगा यात्रा

भारत द्वारा पाकिस्तान के आतंकियों और आतंक परस्त सरकार को सबक सिखाने के लिए चलाए गए **ऑपरेशन सिंदूर** की अपार सफलता के बाद देश के बहादुर जवानों को नमन करने, उनके प्रति अपना आदर भाव प्रकट करने के उद्देश्य से पूज्य सद्गुरु श्री सुधांशु जी महाराज के पावन सान्निध्य में साधना धाम आश्रम, मनाली में ध्यान साधना करने आए देश-विदेश के साधकों, स्थानीय जनता की भारी संख्या में उपस्थिति के बीच विश्व जागृति मिशन द्वारा तिरंगा यात्रा निकाली गई। इस यात्रा में हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री जयराम ठाकुर ने अपनी सहभागिता कर पूज्य महाराजश्री से आशीर्वाद प्राप्त किया। इस तिरंगा यात्रा में पूर्व मंत्री गोविंद सिंह ठाकुर सपत्नीक, बंजार के विधायक श्री सुरेन्द्र शौरी व प्रदेश के गणमान्य नेताओं ने भी शिरकत की। सभी गणमान्यों ने कहा कि महाराजश्री के सान्निध्य में इस तिरंगा यात्रा में शामिल होकर और गुरुवर से आशीर्वाद प्राप्त कर देशप्रेम, आत्मिक शांति और आध्यात्मिक ऊर्जा की अनुभूति हुई। ●

चलो भगवान श्रीकृष्ण की लीलाभूमि वृन्दावन
ध्यान साधना शिविर
में भाग लेने का सुनहरा अवसर
आइये, जहां बाल कृष्ण का बचपन बीता वहां ध्यान की यात्रा करें
परम पूज्य सुधांशु जी महाराज एवं डॉ. अर्चिका दीदी के दिव्य ज्ञान द्वारा निर्देशित
श्रीकृष्ण ध्यान योग
12 से 16 नवंबर 2025
श्री कृष्ण की नगरी में विशेष कार्यक्रम:
- परम पूज्य सुधांशु जी महाराज एवं डॉ. अर्चिका दीदी के पावन मार्गदर्शन में ध्यान
- नवीन ध्यान शैलियों से परिचय
- वृन्दावन और आसपास के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण जो अपनी सुंदरता और आध्यात्मिक महत्व के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं।
- सुखद आवास एवं सात्विक भोजन की व्यवस्था
ध्यान स्थली:
भारती उपवन, वैजंती धाम
जगद्गुरु श्री निम्बार्काचार्य द्वार के पास, छटीकरा रोड, वृन्दावन, उत्तर प्रदेश, 281121
शीघ्र अपना स्थान सुरक्षित करें!
सीमित आवास व्यवस्था
वृन्दावन और आसपास के दर्शनीय स्थल (ध्यान स्थली से उनकी दूरी)
श्री बांके बिहारी मंदिर 8.6 KM
प्रेम मंदिर 3.9 KM
इस्कॉन मंदिर (कृष्ण बलराम मंदिर) 4.4 KM
माँ वैष्णो देवी धाम 1.2 KM
कालिया दह घाट 5.8 KM
वृंदावन चंद्रोदय मंदिर 2.1 KM
मथुरा 12.6 KM
गोकुल 23.6 KM
निधिवन 8.1 KM
गोवर्धन पर्वत 17.7 KM
बरसाना 39.9 KM
नंदगांव 45.4 KM
नोटः- रमणीक स्थलों पर भ्रमण करने की व्यवस्था साधकों को स्वयं करनी होगी।
आयोजक: विश्व जागृति मिशन
पंजीकरण व अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:
(+91) 9589938938, 9685938938, 8826891955, 9312284390

उत्तम स्वास्थ्य के लिए सर्वोत्तम पेय है छाछ

छाछ दही से बनाया जाता है और इसमें प्रोटीन, कैल्शियम, विटामिन बी12 और अन्य आवश्यक पोषक तत्व भरपूर मात्रा में होते हैं। छाछ एक स्वादिष्ट और पौष्टिक पेय है जो कई स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है। इसे अपने आहार में शामिल करके आप अपने स्वास्थ्य में सुधार कर सकते हैं। यह एक ताजगी देने वाला और पौष्टिक पेय है।

पाचन में सहायक - छाछ पाचन तंत्र को स्वस्थ रखने में मदद करती है। इसमें मौजूद लैक्टिक एसिड पाचन एंजाइमों को सक्रिय करता है, जिससे भोजन का पाचन आसानी से होता है। यह कब्ज, अपच और गैस जैसी समस्याओं से राहत दिलाती है।

शरीर को ठंडक पहुंचाती है - गर्मियों में छाछ शरीर को ठंडक पहुंचाने का एक बेहतरीन विकल्प है। यह शरीर के तापमान को नियंत्रित करने में मदद करती है और डिहाइड्रेशन से बचाती है।

वजन नियंत्रण में सहायक - छाछ में कैल्शियम और प्रोटीन होता है, जो वजन नियंत्रण में मदद करते हैं। यह पेट को लंबे समय तक भरा रखता है, जिससे आप अधिक खाने से बचते हैं।

हड्डियों को मजबूत बनाती है - छाछ में कैल्शियम की अच्छी मात्रा होती है, जो हड्डियों को मजबूत बनाने के लिए आवश्यक है। यह ऑस्टियोपोरोसिस के खतरे को कम करने में मदद करती है।

इम्यूनिटी - छाछ में प्रोबायोटिक्स होते हैं जो इम्यूनिटी को बढ़ावा देते हैं। शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाता है।

त्वचा के लिए लाभकारी - छाछ में लैक्टिक एसिड होता है जो एक प्राकृतिक एक्सफोलिएंट का काम करता है। यह त्वचा को मुलायम और चमकदार बनाता है।

एसिडिटी में राहत - छाछ एसिडिटी और पेट की जलन को कम करने में मदद करती है। यह पेट के अम्ल को संतुलित करती है। ●

गर्मियों में ठंडक देने वाला प्रकृति का स्वास्थ्यवर्धक उपहार

यूं तो पुदीना का प्रयोग स्वाद और औषधीय गुणों के लिए कभी भी किया जा सकता है, लेकिन अपनी ठंडक के कारण खास तौर से गर्मियों में यह बेहद फायदेमंद होता है। गर्मी के प्रकोप से बचने के लिए पुदीने का खाने-पीने में अवश्य प्रयोग करें।

1. पेट की गर्मी को कम करने के लिए पुदीने का प्रयोग बेहद फायदेमंद है। इसके अलावा यह पेट से संबंधित अन्य समस्याओं से भी जल्द निजात दिलाने में लाभकारी है। इसका कोई साइड इफेक्ट भी नहीं है।
2. पैर के तलवों जलन को दूर करता है। फ्रिज में रखे हुए पुदीने को पीसकर तलवों पर लगाना चाहिए। इससे पैरों की जलन कम होती है।
3. सूखा या गीला पुदीना छाछ, दही, कच्चे आम के पने के साथ मिलाकर पीने पर पेट में होने वाली जलन दूर होगी और ठंडक मिलेगी। गर्म हवाओं और लू से भी बचाव होगा।
4. अगर आपको अक्सर टॉनसिल्स की शिकायत रहती है और इसमें होने वाली सूजन से भी आप परेशान हैं तो पुदीने के रस में सादा पानी मिलाकर इस पानी से गरारे करना आपके लिए फायदेमंद होगा।
5. गर्मी में पुदीने की चटनी का रोजाना सेवन सेहत से जुड़े कई फायदे देता है। पुदीना, काली मिर्च, हींग, सेंधा नमक, मुनक्का, जीरा, छुहारा सबको मिलाकर चटनी पीस लें। यह चटनी पेट के कई रोगों से बचाव करती है।
6. पुदीने व अदरक का रस थोड़े से शहद में मिलाकर चाटने से खांसी ठीक हो जाती है।
7. पुदीने की पत्तियों का लेप करने से कई प्रकार के चर्म रोगों को खत्म किया जा सकता है। घाव भरने के लिए भी यह उत्तम है।
8. पुदीने के नियमित सेवन से पीलिया जैसे रोगों में लाभ मिलता है। वहीं मूत्र संबंधी रोगों के लिए भी पुदीने का प्रयोग बेहद लाभदायक है। ●

'धर्मो रक्षति रक्षितः' धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए धर्मादा से जुड़ें

धर्म शास्त्रों का संदेश है कि व्यक्ति जो भी कमाये उसमें से कुछ अंश धर्म के लिए दान कर अपने धन की शुद्धि करे। क्योंकि कहा गया है—'धर्मो रक्षति रक्षितः' जो धर्म की रक्षा करता है धर्म उसकी रक्षा करता है। प्राचीन समय में हर व्यक्ति अपनी कमाई में से दसवां भाग ऐसे कार्यों में दान पुण्य करता था। इससे व्यक्ति की आय चाहे भले ही कम रही हो, लेकिन उसकी कमाई में बरकत बनी रहती थी। समय बदला और लोगों की आय भी बढ़ी लेकिन वे धीरे-धीरे दान-पुण्य करना भूलने लगे जिससे उनकी आय में बढ़ोत्तरी होने के बाद भी बरकत में कमी होने लगी। लोगों की आय भी बढ़े और बरकत भी बनी रहे इस उद्देश्य से पूज्य गुरुदेव जी महाराज ने विश्व जागृति मिशन द्वारा भक्तों के कल्याण के लिए धर्मादा सेवाएं प्रारम्भ करवाई हैं। मिशन अनाथाश्रम, गुरुकुल, योगा स्कूल, वृद्धाश्रम, धर्मार्थ अस्पताल, गौशालाएं, भण्डारे, आश्रम एवं मंदिर निर्माण, यज्ञ, सत्संग एवं साधना शिविर तथा दैवीय आपदाओं में सेवा-सहयोग भी करता है। आप इन सेवाकार्यों में दान-पुण्य कर अपने घर-परिवार में सुख-शांति और नौकरी-व्यापार में उन्नति-प्रगति का वरदान पायें।

**इस जीवन का पैसा अगले जन्म में काम नहीं आता,
मगर इस जीवन का पुण्य जन्मों, जन्मों तक काम आता है।**

संस्कृति का संवाहक गुरुकुल

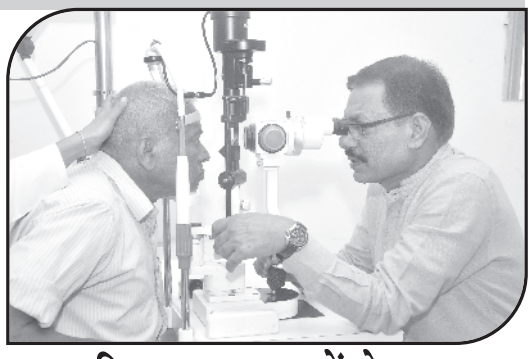

करुणासिन्धु अस्पताल में नेत्र उपचार

बालाश्रम (अनाथाश्रम)

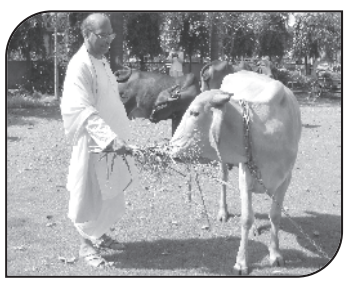

गौशाला में गौग्रास

आनन्दधाम का वृद्धाश्रम

यज्ञ-अग्निहोत्र

दैवीय आपदा सहयोग

आनन्दधाम में भण्डारा

यदि आप अभी तक धर्मादा सदस्य नहीं बने हैं और विश्व जागृति मिशन द्वारा चलाये जा रहे सेवा प्रकल्पों से संतुष्ट हैं तो श्री जी.सी. जोशी, दूरभाष-09311534556 पर सम्पर्क करें।

एक सुविधा यह भी

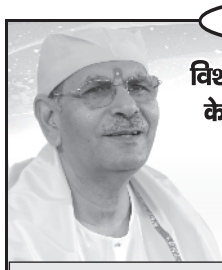

विश्व जागृति मिशन द्वारा संचालित विभिन्न सेवाप्रकल्पों के लिए दान आप पे.टी.एम. एवं अन्य यू.पी.आई. ऐप द्वारा भी कर सकते हैं।

Paytm UPI Accepted Here

भुगतान करने के पश्चात श्री जी.सी. जोशी जी के वाट्सऐप नं॰ 93115 34556 पर अवश्य सूचित करें।

आपके द्वारा दिया गया सहयोग आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है।

भुगतान करने के लिए पे.टी.एम. या किसी भी अन्य यू.पी.आई. भुगतान ऐप में QRcode को स्कैन करें

सद्गुरु के ज्ञान किरणों से खिलता है शिष्य का हृदय कमल

आप जिस परम्परा को मानते हों उसका दृढ़ता से पालन जरूर करें। एक मत, एक पन्थ, एक संत, एक ग्रंथ, एक मन्त्र और एक इष्टदेव आपके जीवन का आधार बन जाय तो कल्याण हो जाय।

सोचिये, कबीर अपने गुरु का कितना सम्मान करते थे, कितनी श्रद्धा थी उनको अपने गुरु पर। सद्गुरु रामानन्द दीक्षा देने के लिये तैयार नहीं थे। कबीर रात को पंचगंगा घाट की सीढ़ी पर लेट गये। प्रातः काल जब रामानन्द जी गंगास्नान करने के लिये जाने लगे तो उनका पैर अंधेरे में सीढ़ी पर लेटे हुए कबीर पर पैर पड़ गया। स्वामी रामानन्द के मुंह से अनायास निकल पड़ा-राम राम कहो भाई। कौन हो तुम। कबीर ने पांव पकड़ लिये। मैं आपका ही दास तो हूँ। आपके अन्तर में गूंजता हुआ नाम मेरे अन्तःकरण में उतर आया। आपकी कृपा से मेरे हृदय के तार जागृत हो उठे। कबीर ने कहा-हे गुरु! मुझ पर अपनी कृपा बनाये रखना, भूलना नहीं- कमलन को रवि एक है, रवि को कमल अनेक। जैसे उगते सूरज को देखकर अनेक कमल खिल उठते हैं उसी तरह एक सद्गुरु के कारण लाखों शिष्यों के हृदय कमल खिला करते हैं।

कबीर कहते हैं कि जैसे लाखों कमल के लिये एक सूरज है वैसे ही अनेकों शिष्यों के लिये एक सद्गुरु का सहारा होता है। दुनिया रूठ जाय तो रूठ जाय लेकिन सद्गुरु नहीं रूठना चाहिये। गुरु गीता में कितना सुन्दर लिखा है कि-

स्थावरं जङ्गमं व्याप्तं यत्किंचित् सचराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।

जब भी मनुष्य के जीवन में संकट की बेला आये तो उस समय एक ही आधार होता है। दुर्भाग्य की मार से बचाने के लिये सद्गुरु का ही आधार होता है और अगर वही छिन जाय तो फिर कहां जायें। ●

जीवन जागृति का मंत्र देते हैं सद्गुरु

मनुष्य की सुप्त शक्तियों को जागृत करने वाला, स्वयं का स्वयं से परिचय कराने वाला, भय-भ्रम तोड़कर मन में आशा उत्साह जगाने वाला, कर्मठता का सतत पाठ पढ़ाने वाला, भक्त और भगवान के बीच सतु वेनकर दोनों का रिश्ता जोड़ने वाला सद्गुरु है। जिसकी शरण में बैठने से शांति मिले, करुणा का भाव जागृत हो, प्रभु प्रेम की हिलोर उठे, वही सद्गुरु है। जीवन में जागृति का मंत्र देन वाले सदगुरु आजकल कम ही मिलते हैं। क्योंकि जो प्राणों के अंदर समाकर जीवन की धारा बदल दे, वही सद्गुरु है। गुरु सबसे पहले शिष्य के जीवन को अनुशासित करता है। सद्गुरु अपने शिष्य को जीवन जीने की कला सिखाता है और बताता है कि आज तेरी एक नई जिंदगी शुरू होगी, आज से तेरी दिनचर्या बदलेगी और तेरे सोचने का ढंग बदलेगा। तेरे कर्म में कुशलता आएगी, तेरे कर्म ही तुझे बंधनों से मुक्त करेंगे, तेरे सौभाग्य का जागरण तेरे कर्मों से ही संभव होगा, यह नव रूपांतरण सद्गुरु

ही कर सकता है। क्योंकि सद्गुरु वही है जो शिष्य को सद्विचार देकर कृतार्थ करे, सद्गुरु के विचार चिंगारी जैसे होते हैं, जिन्हें शिष्य अपने भीतर धारण करके सुलगा लेता है, फिर वही चिंगारी ज्ञान ज्योति के रूप में प्रज्जवलित होकर शिष्य के जीवन में ऐसी जगमगाहट पैदा करती है कि उसका पहला सारा कल्मष भस्म हो जाता है। जैसे सोने के अंदर जहां कहीं भी खोट होता है, वह आग में पहुंचते ही कुंदन बन जाता है, ऐसे ही सद्गुरु की ज्ञान ज्योति से जुड़ने के बाद शिष्य के जीवन में परिवर्तन आने लगता है। ●

गौ संरक्षण में सहभागी बनें

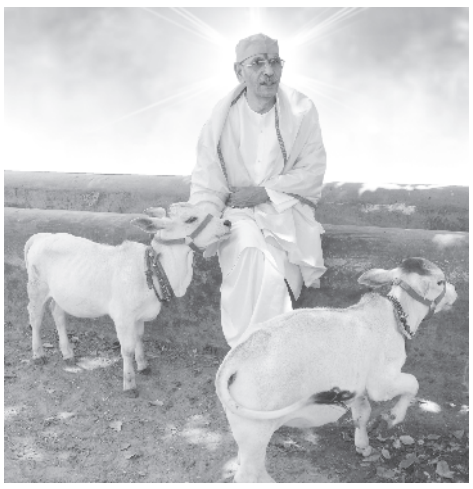

1. गौ, गंगा, गीता, गायत्री और गुरु सनातन संस्कृति के आधार स्तंभ हैं। इनकी सेवा, बंदगी और संरक्षण करना हमारा परम कर्तव्य है।
2. गौ माता के संरक्षण से ही हमारी धरती, प्रकृति और संस्कृति का संरक्षण होगा।
3. गाय का दूध अमृत के समान है। गोमूत्र, गोबर भी बहुत लाभकारी है।
4. नवजात शिशु सिर्फ अपनी माँ के ही दूध पर आश्रित रहता है लेकिन यदि किसी कारणवश उसे माँ का दूध नहीं मिल पाता तो गौ माता का ही दूध ऐसा है जिससे शिशु का पोषण हो जाता है।
5. गाय के दूध मे स्वर्णक्षार पाया जाता है, इसी कारण इसका दूध हल्का पीला नजर आता है, इसे पीने से बुद्धि का तीव्र विकास होता है।
6. समुद्र मंथन में निकले चौदह रत्नों में गाय एक विशिष्ट रत्न हैं। हर दृष्टि से मानव समाज के लिए उपयोगी और कल्याणकारी गौ माता पूजनीय, वंदनीय और पालनीय है। ●

कामधेनु गौशाला

गौ माता के संरक्षण और संवर्द्धन हेतु दान देकर पुण्य के भागीदार बनें।

कृपया गौशाला में दान देने के लिए आप अपनी सहयोग राशि ''विश्व जागृति मिशन-गौशाला'' के एक्सिस बैंक लिमिटेड, A-11, विशाल एनक्लेव, राजौरी गार्डन गार्डन, नई दिल्ली - 110027 के खाता संख्या -910010001264246, IFSC Code - UTIB0000066 में सीधे जमा करवा सकते हैं, इसकी सूचना आप श्री सतीश शर्मा-मो०-9310278078 पर अवश्य भेजें ताकि जमा राशि की रसीद बनाकर आपको प्रेषित कर सकें।

Paytm UPI Accepted Here

भुगतान करने के लिए पे.टी.एम. या किसी भी अन्य यू.पी.आई. भुगतान ऐप में QRcode को स्कैन करें

आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा 80-G के अंतर्गत कर मुक्त है।

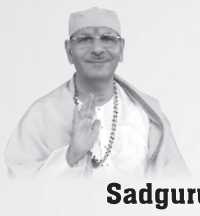

कार्यालय : आनन्दधाम आश्रम, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, बक्करवाला मार्ग, नई दिल्ली-110041
दूरभाष : 9560792792, 9582954200
ई-मेल : annapurna@vishwajagritimission.org
वेबसाइट : www.vishwajagritimission.org

अपने स्वयं व अपनों के जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ व पूर्वजों की पुण्यस्मृति में अन्नपूर्णा योजना के अन्तर्गत यजमानों द्वारा आनन्दधाम आश्रम के गुरुकुल, वृद्धाश्रम में भोजन करवाया जाता है तथा गऊओं के लिए गौग्रास भी दिया जाता है। इस अवसर पर यजमानों के लिए मंगलकामना करते हुए आचार्यों एवं ऋषिकुमारों द्वारा प्रार्थना और यज्ञ भी किया जाता है।

इस योजना की सहयोग राशि आप सीधे बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं-

"VISHWA JAGRITI MISSION" का A/c No. 916010029741912 Axis Bank, East Punjabi Bagh, New Delhi-110026, IFS CODE - UTIB0002497.

www.vishwajagritimission.org
आनंदधाम आश्रम, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, बक्करवाला मार्ग, नई दिल्ली-110041

राशि जमा कराने के उपरान्त उसकी सूचना हमें ई-मेल : annapurna@vishwajagritimission.org व्हाट्सऐप नम्बर : 9582954200, 9560792792 पर अवश्य भेजें,ताकि जमा की गई राशि की रसीद आपको भेजी जा सके।

एक से अधिक तिथियाँ आरक्षित कराने के लिए उपरोक्त ई-मेल आई.डी. पर सूचित करें।
(आपके द्वारा दिया गया दान आयकर की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है)

Admission Open
Session 2025 - 26

With the blessings of the most revered Sadgurudev Maharaj Ji and Yoga Guru Dr. Archika Didi Ji

Vishwa Jagriti Mission International Yog School

Affiliated to Central Sanskrit University, Janakpuri, New Delhi

Our Courses

1. B.Sc. in Yogic Science - 3 years
2. M.Sc. in Yogic Science - 2 years
3. PG Diploma in Yogic Science - 1 year
4. PG Diploma in Yoga, Naturopathy and Dietetics - 1 year
5. PG Diploma in Karmakanda - 1 year
6. PG Diploma in Computer Science and NLP - 1 year

Contact for details for admission in the above mentioned courses

Contact:-7827943295, 7827943297

Address - Ananddham Ashram, Bakkarwala Marg, Nangloi-Najafgarh Road, New Delhi-110041

आनंदधाम में अहमदाबाद के गुरुभक्त के विवाह की 50वीं वर्षगाँठ का भव्य आयोजन

आनन्दधाम आश्रम, नई दिल्ली। आज कल डेस्टीनेशन वेडिंग का चलन तेजी से बढ़ रहा है। मतलब घर से दूर जाकर किसी विशेष स्थान पर वैवाहिक रस्मों को पूरा करना। अब विवाह ही नहीं वैवाहिक वर्षगाँठ मनाने के लिए भी लोग अपने गृह स्थान से दूर जाकर किसी दूसरे शहर के विशेष स्थानों में जाने लगे हैं। किसी को कोई ऐतिहासिक जगह राजा- महाराजाओं के महल पसंद आते हैं, तो कोई किसी विशेष शहर के फाइव स्टार या सेवेन स्टार होटल को पसंद करता है। भौतिकता की इस चकाचौंध में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो भौतिक सुख-सम्पदा की बहुतायत होते हुए भी आध्यात्मिकता को विशेष महत्व देते हैं। भौतिक समृद्धि के इस युग में आध्यात्मिक ऊर्जा से भरपूर अहमदाबाद से गुरु के प्यारे शिष्य हैं श्री श्रीचन्द वाचानी जी, जिन्होंने अपने गृहस्थ जीवन के सुखद सफल स्वर्णिम पचास वर्ष पूर्ण होने पर वैवाहिक वर्षगाँठ की स्वर्ण जयंती पर 5 जून, 2025 को परिवार सहित गुरु तीर्थ आनंदधाम में आकर अपने गुरु के सान्निध्य में विवाह वर्षगाँठ को धार्मिक आयोजन से जोड़कर विशेष उत्सव-महोत्सव मनाया।

श्री वाचानी जी के स्वर्णिम वैवाहिक वर्षगाँठ पर आनंदधाम में गुरुकुल और उपदेशक महाविद्यालय के विद्वान आचार्यों व धर्माचार्यों के द्वारा आयोजन में आये हुए भक्तों का तिलक लगाकर और फूलमाला पहनाकर स्वागत के साथ विशेष पूजन-अनुष्ठान किया गया, जिसमें वाचानी जी के आग्रह पर मिशन की प्रबंधन समिति ने उनके विवाह के स्वर्ण जयंती वर्ष पर विवाह संबंधी सम्पूर्ण रश्में पूर्ण करवाने की व्यवस्था की। इस अवसर पर उन्होंने देव दर्शन, यज्ञ, रुद्राभिषेक, शिव वरदान तीर्थ में द्वादश ज्योतिर्लिंगों का पूजन, संध्या यज्ञ-आरती सम्पन्न कराया गया। उल्लेखनीय है कि इसी दिन 5 जून, 2025 को विश्व पर्यावरण दिवस भी था ऐसे अवसर पर उनके द्वारा आनंदधाम आश्रम में वृक्षारोपण भी करवाया गया। श्री वाचानी जी और उनके परिवार ने गौदान कर गऊओं को अपने हाथों से गौग्रास खिलाया, ब्राह्मण एवं वृद्धों व गरीबों को भोजन कराया। श्री वाचानी जी के 50वीं वैवाहिक वर्षगाँठ पर आश्रम के मंदिरों और अमृतधाम आयोजन स्थल को फूल, रंगोलियों और गुब्बारों से विशेष रूप से सजाया गया था। इस अवसर पर आश्रम की रमणीयता भव्य और दिव्य थी। वाचानी परिवार तीन दिनों तक आनंदधाम आश्रम में रहे और उनके इस आयोजन को विशेष यादगार बनाने के लिए उन्होंने गुरुवर और मिशन की प्रबंधन समिति का तहेदिल से धन्यवाद व आभार व्यक्त किया। पूज्य गुरुवर से इस शुभ अवसर पर आशीर्वाद और शुभकामनाएं प्राप्त कर वाचानी परिवार ने स्वयं को अत्यंत सौभाग्शाली अनुभव किया। गुरुभक्तों के विदाई के समय पूज्य गुरुवर ने सभी को आशीर्वाद स्वरूप अंगवस्त्र पहनाये और मिशन के महामंत्री श्री देवराज कटारीया जी ने पुरुषों को फूलमाला पहनाकर और महिला भक्तों को पुष्प मालायें भेंटकर शुभकामनाएं दीं।

श्री वाचानी जी जैसे अन्य गुरुभक्त भी आने वाले समय में अपने व अपने परिवार के सदस्यों के जन्मदिन, वैवाहिक वर्षगाँठ व शुभ मांगलिक अवसरों को आनन्दधाम में आयोजित करवा कर विशेष यादगार बनाना चाहते हैं तो उनके आग्रह पर मिशन की प्रबंधन समिति द्वारा आनन्दधाम आश्रम में सम्पूर्ण व्यवस्था की जायेगी। ●

आपकी हर समस्या का पूजा-प्रार्थना से समाधान - युगऋषि पूजा एवं अनुष्ठान केन्द्र

क्या आप अपनी नौकरी-व्यवसाय से परेशान हैं? क्या आपके घर-परिवार में कलह-क्लेश रहता है? क्या आप रोग-बीमारी से परेशान हैं? क्या आप संतान सुख से वंचित हैं? क्या आपके बच्चों का मन पढ़ाई में नहीं लग रहा? क्या आपके बच्चों के शादी-विवाह में रुकावटें आ रही हैं? क्या आप किसी और भी अन्य तरह की परेशानियों से परेशान हैं? यदि हां, तो आप हमें बताएं। हमारे पास आपकी हर समस्या का समाधाान हैं। कहते हैं जो बात दवा से नहीं बन पाती है वह दुआ से ठीक हो जाती है। भगवान की पूजा-पाठ, यज्ञ-अनुष्ठान में बहुत बड़ी शक्ति है जो बड़ी से बड़ी समस्या को ठीक कर देती है। पूज्य सद्गुरु श्री सुधाांशु जी महाराज के आशीर्वाद से आनन्दधाम आश्रम नई दिल्ली में युगऋषि पूजा एवं अनुष्ठान केन्द्र की स्थापना की गई है जहां सुविज्ञ ज्योतिषाचार्यों द्वारा जन्मपत्री देखकर पूजा-पाठ, जप, यज्ञ-अनुष्ठान की उचित सलाह दी जाती है। हमारे यहाँ नौकरी-व्यवसाय में उन्नति, संतान प्राप्ति, पढ़ाई-लिखाई में सफलता, कलह-क्लेश की शांति, रोग-बीमारी के निवारण और शादी-विवाह में आ रही बाधाओं को दूर करने के लिए सुयोग्य पंडितों द्वारा पूजा-पाठ, जप-यज्ञ-अनुष्ठान के माध्यम से जीवन में हर प्रकार की समस्या का निवारण किया जाता है। यदि आप किसी भी समस्या से परेशान हैं तो उसके निदान के लिए युगऋषि पूजा एवं अनुष्ठान केन्द्र में आपका स्वागत है।

गुरुपूजन का विशेष पर्व है गुरु पूर्णिमा

गुरुपूर्णिमा पर वेदों के रचयिता महर्षि वेदव्यास जी का जन्म हुआ। महर्षि वेदव्यास को इस जगत का प्रथम गुरु माना जाता है। वे भगवान विष्णु का अवतार हैं और गुरु में ब्रह्मा, विष्णु और शिव की शक्ति समाहित है। भारतीय संस्कृति में गुरु को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। हमारे धर्म में हर वर्ष आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा तिथि को गुरुपूर्णिमा का पावन पर्व मनाया जाता है। इस वर्ष यह गुरुपूर्णिमा 10 जुलाई, 2025 को है। गुरुपूर्णिमा के दिन स्नान-दान और उपवास के कार्य शुभ फलदायी माने जाते हैं। इस दिन गुरुदर्शन, पूजन, वंदन विशेष शुभ माना जाता है। इस पर्व पर यह विशेष कोशिश होनी चाहिए कि गुरु का दर्शन हो जाये और गुरु की मेहर भरी नजर शिष्य पर पड़ जाये। इस दिन अगर शिष्य ने गुरु का दर्शन, आदर-सम्मान कर उनका आशीर्वाद प्राप्त कर लिया तो उसके जीवन में सकारात्मक बदलाव आते हैं। उसका जीवन खुशहाल हो जाता है। ●

सभी पर्व-त्योहारों पर पूजा-पाठ, यज्ञ-अनुष्ठान के लिए "युगऋषि पूजा एवं अनुष्ठान केन्द्र" में सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्र: +91 9560792792,8826891955,7291986653,9599695505

युगऋषि पूजा एवं अनुष्ठान केन्द्र द्वारा आयोजित आगामी पूजा अनुष्ठान जिनमें आप अपनी इच्छानुसार भाग ले सकते हैं

14 जून, 2025	शनिवार	आषाढ़ कृष्ण चतुर्थी
15 जून, "	रविवार	मिथुन संक्रांति
21 जून, "	शनिवार	योगिनी एकादशी
23 जून, "	सोमवार	सोम प्रदोष एवं मास शिवरात्रि
25 जून, "	बुधवार	आषाढ़ अमावस्या
27 जून, "	शुक्रवार	श्री जगन्नाथ जी यात्रा
04 जुलाई, 2025	शुक्रवार	भड्डली नवमी
06 जुलाई, "	रविवार	देवसयनी एकादशी
08 जुलाई, "	मंगलवार	भौम प्रदोष
10 जुलाई, "	गुरुवार	गुरु पूर्णिमा
14 जुलाई, "	सोमवार	श्रावण कृष्ण चतुर्थी

विश्व जागृति मिशन (रजि०) के लिए श्री देवराज कटारीया द्वारा समाचार पत्र "धर्मदूत" ओंकारेश्वर महादेव मंदिर, 'जी' ब्लॉक, मानसरोवर गार्डन, नई दिल्ली-110015 से प्रकाशित एवं पुष्पक प्रिन्टर्स द्वारा मुद्रित। ग्रॉफिक डिजाइनिंग : सीता फाईन आर्ट्स प्रा० लि०, नई दिल्ली। सम्पादक : डॉ. नरेन्द्र मदान